लोकमत समाचार

युवाओं को संबोधित करते आध्यात्मिक गुरु गौरांग दास.

# प्राचीन व आधुनिक ज्ञान के बीच समन्वय होना जरूरी

## आध्यात्मिक गुरु गौरांग दास ने कहा

**नागपुर** : इस्कॉन के शासी मंडल के आयुक्त व आध्यात्मिक गुरु डॉ. गौरांग दास प्रभु का मानना है कि आज की पीढ़ी तेजी से आशाहीन होती जा रही है. यह एक बड़ी चिंता का विषय है. केवल माता-पिता के लिए नहीं बल्कि शिक्षक व शिक्षा संस्थाओं के लिए भी चिंता का विषय है. गीता में भी कहा गया है कि आशा का नाश होना सबसे बड़ा नाश है. इस नाश को रोकने के लिए जरुरी है कि आधुनिक व प्राचीन ज्ञान के बीच समन्वय स्थापित किया जाए. साथ ही अपनी आंतरिक चेतनाओं का विकास करना जरुरी है.

भारतीय प्रबंधन संस्थान नागपुर (आईआईएम नागपुर) की ओर से डॉ. गौरांग दास प्रभु का संस्थान के शिक्षक व विद्यार्थियों को लाइफ मैनेजमेंट स्किल पर व्याख्यान का आयोजन किया गया. इस व्याख्यान के लिए गुरुवार को डॉ. गौरांग दास प्रभु नागपुर पहुंचे. इस दौरान उन्होंने पत्रकारों से चर्चा की. इस दौरान आईआईएम नागपुर के निदेशक डॉ. भीमराया मैत्री प्रमुख रुप से उपस्थित थे.

उन्होंने कहा कि हर माता-पिता यही चाहते हैं कि उनके बच्चे तनाव व अवसाद से दूर रहें. यह तभी हो सकता है जब आत्मा परमात्मा के साथ संबंध स्थापित करे. पर्यावरण के साथ समन्वय स्थापित करे. यदि हम लोगों को आंतरिक रुप से शांत करने में सफल हुए तो पर्यावरण में भी शांति आएगी और समाज में शांति स्थापित होगी. उन्होंने कहा कि आज हम बाहरी ऊर्जा को बढ़ाने पर चर्चा हो रही है.

लेकिन आंतरिक ऊर्जा को बढ़ाने के लिए कोई प्रयास नहीं हो रहे. यही वजह है कि व्यक्ति अपने भीतर छिपी सबसे बड़ी ऊर्जा का साक्षात्कार नहीं कर पा रहा है. जिस दिन वे अपनी आंतरिक ऊर्जा से साक्षात्कार करेंगे, उस दिन उन्हें आगे बढ़ने व सफल होने से कोई नहीं रोक सकता.आध्यात्मिक शिक्षा चेतना को जगाने में मदद करती है.